School of Social Sciences

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "जनपद मिर्जापुर में खाद्य उत्पादन एवं पोषण सुरक्षा का एक भौगोलिक अध्ययन" **"Janpad Mirzapur me khadya Utpadan evam Poshan Suraksha ka ek Bhaugolik Adhyayan"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **"Geography"** under **'School of Social Sciences'** of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year **2023-24.**

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of **Prof. Sanjay Kumar Singh** and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

(Singnature)
Research Supervisor
Prof. Sanjay Kumar Singh
Faculty of Subject - **Geography**

Sachin yadav
(Candidate Singnature)
Sachin Kumar Yadav
En. No.- 2301403

(Singnature)
Prof. Santosha Kumar
Director of School of Social Sciences

(Singnature)
Prof. P.K. Pandey
Secretary of RDC/ Director, R&D Cell

"जनपद मिर्जापुर में खाद्य उत्पादन एवं पोषण सुरक्षा का एक भौगोलिक अध्ययन"

"JANPAD MIRZAPUR ME KHADYA UTPADAN EVAM POSHAN SURAKSHA KA EK BHAUGOLIK ADHYAYAN"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN GEOGRAPHY

To

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

By

Name of the Candidate :- Sachin Kumar Yadav

Enrollment No. :- 2301403

Under the Supervision of

Prof. Sanjay Kumar Singh

Faculty of Geography

School of Social Sciences

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Shantipuram, (Sector-F), Phaphamau, Prayagraj – 211013

Sachinyadav

सारांश

अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य के एक प्रमुख जनपद मिर्जापुर में खाद्यान्न उत्पादन एवं पोषण सुरक्षा की स्थिति का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। जनपद में खाद्यान्न उत्पादन सीधे–सीधे क्षेत्र की पोषण सुरक्षा से जुड़ी हुई है अध्ययन क्षेत्र में यह पाया गया है कि जनपद के ग्रामीण क्षेत्र में अनेक परिवार ऐसे है जो आज भी पोषण तत्वों से वंचित हैं यह स्थित प्रायः गरीबी, असंतुलित आहार, जागरूकता की कमी तथा खाद्यान्न वितरण प्रणाली की असंगतियों के कारण उत्पन्न होती है पोषण सुरक्षा के संदर्भ में विद्यालयों में मिड डे मील योजना, आंगनबाड़ी केन्द्रों द्वारा पूर्ण पोषण आहार योजना तथा समन्वित बाल विकास योजनाएं जैसे पोषण अभियान एक सकारात्मक पहलू है परंतु इस योजना के कार्यान्वयन संतोषजनक नहीं है

अध्ययन क्षेत्र में खाद्यान्न उत्पादन और पोषण सुरक्षा के बीच गहरा संबंध है जिसे बेहतर करने के लिए कृषि नीति, जल प्रबंधन, कृषि में तकनीक हस्ताक्षेप, कृषकों को प्रशिक्षण तथा पारदर्शी वितरण प्रणाली द्वारा किया जा सकता है जनपद मिर्जापुर में खाद्यान्न एवं पोषण सुरक्षा को सुधारने के लिए स्थानीय संसाधनों का उचित उपयोग, योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन तथा जनसहभागिता अत्यंत आवश्यक है

प्रमुख शब्द – पोषण सुरक्षा, खाद्यान्न उत्पादन, पोषक तत्व, असंतुलित आहार, मिड–डे मील, संतोषजनक आदि।

Sachin yadav

विषय–वस्तु

क्र0सं0	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	(1–3)
2.	पूर्व साहित्य का पुनरावलोकन	(3–4)
3.	अध्ययन क्षेत्र	(5–6)
4.	अध्ययन का उद्देश्य	(6)
5.	शोध विधितंत्र	(7)
6.	अध्ययन क्षेत्र का महत्व एवं प्रासंगिकता	(7)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

साहित्यिक सूचना रिपोर्ट

Sachin yadav

जनपद मिर्जापुर में खाद्य उत्पादन एवं पोषण सुरक्षा का एक भौगोलिक अध्ययन

प्रस्तावना–

मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में रोटी, कपड़ा एवं मकान प्रमुख है। लेकिन बिना कपड़े और मकान के मानव जीवन सम्भव हो सकता है परन्तु बिना भोजन के जीवन जीवना सम्भव नहीं हो सकता है इसीकारण हर व्यक्ति भोज्य पदार्थ के लिए अथक संघर्ष करता है इतना प्रयास करने के बाद भी कई बार ऐसा हो जाता है कि व्यक्ति के संघर्ष तथा सरकार की योजनाओं के उपरान्त भी सभी व्यक्ति तक भोजन की संतुलित मात्रा उपलब्ध नहीं हो पा रही है, इसका सबसे प्रमुख कारण भोज्य पदार्थों के दामों में वृद्धि है। मानव जगत में खाद्य पदार्थ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न हो पाने के कारण मानव समाज में कुपोषण, भुखमरी, गरीबी, अराजकता जैसी गम्भीर समस्याओं का जन्म हो रहा है। जब व्यक्ति को आवश्यकता के अनुसार खाद्य पदार्थ प्राप्त नहीं हो पाता है, तो मानव का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास में बाधा उत्पन्न हो जाती है, पौष्टिक आहार के अभाव में बच्चों में कुपोषणपन वजन का घटना तथा गर्भवती स्त्रियों में कई प्रकार की बीमारियों का जन्म होता है और इस प्रकार समाज में भोजन उलब्धता पर्याप्त न होने से समाज में अनेक प्रकार की आर्थिक–सामाजिक विसंगतियां जन्म लेती हैं।

मानव की सबसे प्रमुख आवश्यकता भोजन है। मनुष्य बिना भोजन किए अधिक दिन तक जीवित नहीं रह पायेगा। इसी कारण लोक कल्याणकारी सरकारों का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह अपने राष्ट्र में रह रही जनता को खाद्य उपलब्धता की सुरक्षा प्रदान करे। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात से इस दिशामें अथक प्रयास किये गये, लेकिन कभी–कभी ऐसा भी देखने को मिलता है कि सरकार द्वारा चलाये गए कार्यक्रमों/योजनाओं का लाभ, जानकारी के अभाव के कारण जरूरतमन्द व्यक्तियों तक नहीं पहुंच पाता है और वे लोग अपना जीवन अभाव में जीने के लिए लाचार होते हैं। ऐसे में यह सुनिश्चित होना चाहिए कि एक लोक कल्याणकारी सरकार में सूचनाओं का प्रसार उचित समय तथा व्यवस्थित रूप से किया जाय, जिससे समाज में सबसे निम्न स्तर पर जी रहे व्यक्तियों को समाज की मुख्यधारा में जोड़ा जा सके। इस प्रकार की दिक्कते ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर अधिक देखने को मिलती है। अतः सरकार यह सुनिश्चित करे की विभिन्न योजनाओं की जानकारी ग्रामीण उपभोक्ताओं तक उचित समय पर दी जाये। समाज के हर एक व्यक्ति को मुख्यधारा में शामिल करने के लिए योजनाओं का ठीक ढंग से प्रचार प्रसार करने की आवश्यकता है।

मानव सभ्यताओं का उद्भव नदी घाटियों के आस–पास हुआ है, नदी घाटियों को सभ्यता का पालना कहा जाता है, नदी घाटियों में उपजाऊ मृदा की बहुलता पायी जाती है। आदिमानव भोजन प्राप्त करने के लिए पहले आखेट किया करता था, धीरे–धीरे मानव व्यवसाय का विकास हुआ और वह खाद्य फसलों को उगाना आरम्भ किया तथा धीरे–धीरे मानव, कृषि क्षेत्र का विस्तार करके अपना विकास किया, वर्तमान मानव कृषि उत्पादन से अपना भोजन प्राप्त कर रहा है।

भारत में भी सभ्यताओं का विकास नदी घाटी में हुआ है। नदी घाटियों में उपजाऊ मिट्टी

Sachin yadav

होने के कारण, भारत प्रारम्भिराक काल से ही एक कृषि प्रधान देश है। यहां पर गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, सतलज, गोदावरी, कृष्णा आदि सतत वाहिनी नदियों के दोआब क्षेत्र का विस्तार पाया जाता है जिन्हें खाद्य का कटोरा कहा जाता है। इस क्षेत्र में खाद्य उत्पादकता अधिक है जिसके कारण यहाँ पर अत्यधिक जनसंख्या निवास करती है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में खाद्य उत्पादन में कई गुना वृद्धि किया है। यहां पर खाद्य उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि 1967–68 ई0 में हरित क्रान्ति के बाद हुई। खाद्य उत्पादन में भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है यहां पर पिछले कई दशकों से खाद्य उत्पादन एवं निर्यात के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। मसाला, गन्ना, काजू और दूध उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान है जबकि गेहूँ, चावल, दलहन, सब्जी, मछली और फल में दूसरा स्थान है। भारत के राष्ट्रीय आय में कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। स्वतंत्रता के प्रश्चात (1950–51) कुल उत्पादन 51 मिलियन टन था जो बाद में बढ़कर 2022–23 में खाद्य उत्पादन 323.55 मिलियन टन हो गया है। खाद्य उत्पादन में उत्तर प्रदेश प्रथम स्थान पर है।

उत्तर प्रदेश खाद्य उत्पादन की दृष्टि से सबसे समृद्ध राज्य है। यहां पर गंगा, यमुना, गोमती, घाघरा, चम्बल, सोन आदि नदियों का दोआब क्षेत्र पाया जाता है। जिसके कारण यहां पर बलुई दोमट मृदा का विकास हुआ है जो खाद्य उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण मिट्टी मानी जाती है। यह भारत की जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है जिसमें देश की कुल जनसंख्या का लगभग 17 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। यह भारत के सम्पूर्ण खाद्य उत्पादन का 56.11 मिलियन टन अकेले उत्पादन करता है, राज्य में वर्ष भर में तीन प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है। रबी, खरीफ और जायद इसमें से रबी फसल की उत्पादन क्षमता सर्वाधिक है।

मिर्जापुर उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख खाद्य उत्पादन वाला जनपद है यह देश की 24,96,970 जनसंख्या निवास करती है इस जनपद का सम्पूर्ण भू–क्षेत्र 4521 वर्ग किलोमीटर है। अतः 552 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर में निवास करते हैं जिससे यह जानकारी प्राप्त होती है कि यह खाद्यान्न उत्पादन में एक अग्रणी जनपद है। इस जनपद का भू–जोत अधिकांश सीमान्त आकार का है। जनपद का कुल खाद्य उत्पादन 673003 मिलियन टनहै, जिसके द्वारा जनपद के लोग भोजन भी उपलब्ध करते हैं तथा खाद्यान का कुछ हिस्सा निर्यात भी किया जाता है।

खाद्य उत्पादन सामान्यतः विश्व भर में पायी जाने वाली फसलों तथा जीव जन्तुओं के उत्पादन पर निर्भर करता है। मानव भोजन के अन्तर्गत जिन भी वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है उन सभी को भोज्य पदार्थ के रूप में पंजीकृत किया गया है। मानव लगभग 100 फसलों का उपयोग अपने भोजन के रूप में करता है जो विश्व के कृषि डेटाबेस में पंजीकृत है जबकि खाद्य उत्पादन का 63 प्रतिशत भाग केवल पांच फसलों पर निर्भर है जिसमें गेहूँ, चावल, आलू, गन्ना और मक्का है।

मनुष्य जिन भी खाद्य उत्पादों का उपभोग करता उसमें से सर्वाधिक पौधों और जीवन जगत से प्राप्त करता है। भोज्य पदार्थ में अनाज, दूध, दाल, सब्जी, फल शहद, अण्डे और मांस–मछली आदि शामिल हैं। मानव अपने जीवन के अस्तित्व के लिए फसलों और जानवरों पर आश्रित है।

Sachin yadav

खाद्य सुरक्षा से अभिप्राय है, भूख को मिटाने के लिए खाद्य पदार्थों की उपलब्धता, जबकि वर्तमान समय में हम जिस समस्या का सामना कर रहे हैं वह एक जटिल एवं गम्भीर समस्या है यह कुपोषण अर्थात पोषण सुरक्षा का है। पौष्टिक आहार के लिए मात्र भोजन प्राप्त कारना काफी नहीं है बल्कि भोजन ऐसा हो जिसमें पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपस्थित हो, जिससे महिलाओं और बच्चों को गंभीर समस्याओं से निदान दिलाया जा सके और बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके।

पूर्व साहित्य का पुनरावलोकन–

प्रस्तुत अध्ययन आर्थिक भूगोल एवं कृषि भूगोल के अन्तर्गत आता है कृषि संसाधन, खाद्य संसाधन और मानवीय पोषण के विकास पर अनेकों कार्य हुए हैं। परन्तु प्रस्तुत शोध अध्ययन कई दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो अब तक हुए अध्ययनों से अलग होगा। और आने वाली भावी पीढ़ी के लिए शाश्वत तथा महत्वपूर्ण होगा। इसके अतिरिक्त खाद्यान उत्पादन एवं पोषण सुरक्षा के क्षेत्र में अनेक विद्वानों ने प्रशंसनीय कार्य किये हैं जो निम्नवत है–

- राम केवल गुप्ता (1997) ने अपने शोध ग्रंथ 'ग्रामीण भारत में कृषि–भोजन एवं पोषण की स्थिति' में भूमि उपयोग, फसल प्रतिरूप तकनीकी कृषि का स्तर, उत्पादकता का स्तर, कृषि भूमि पर जनसंख्या का भार, ग्रामीण स्तर पर कृषि उत्पादन तथा खाद्यान्न की स्थिति, भोजन में पोषण तत्व एवं पोषण सम्बन्धित रोग का अध्ययन किया है।

- निशा मिश्रा (2010) ने अपने शोध प्रबन्ध 'भारत में खाद्यान्न उत्पादन की प्रवृत्ति में खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हेतु किये गये सरकारी प्रयास तथा आर्थिक सुधारों का खाद्यान्न उत्पादन का प्रभाव का अध्ययन किया है।'

- वृजेश बाबू (2011) ने अपने शोध ग्रंथ 'जनपद एटा में कृषि उत्पादन में पोषण तत्व एवं उसका मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव' में कृषि संसाधन, कृषि उत्पादन पर जनसंख्या का अधिकार, भोजन उपलब्धता तथा पोषण एवं मानव स्वास्थ्य का अध्ययन किया है।

- डॉ0 अलका गौतम (2012) द्वारा लिखित पुस्तक "आर्थिक भूगोल के मूल तत्व" में कृषि उत्पादन में विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया है जिसमें कृषि उत्पादन को प्रभावित करने वाले कारको तथा अनुकूल दशाओं का अध्ययन है।

- प्रो0 जगदीश सिंह एवं प्रो0 काशीनाथ सिंह (2020) द्वारा लिखित पुस्तक "आर्थिक भूगोल के मूल तत्व" में खाद्यान्न उत्पादन की प्रवृत्ति, प्रतिरूप, व्यापार तथा प्रभावित करने वाले कारकों का अध्यन किया है।

- मंजुला वाधवा, कुरूक्षेत्र पत्रिका (अगस्त 2023), पोषण सुरक्ष विजन 2023, लेख में भूख को खत्म करने, पोषण में सुधार करना, पोषण सुरक्षा बहुआयामी रणनीति, पोषण संकेतों में आदि कारकों का अध्ययन किया गया है।

Sachin yadav

- निमिष कपूर, कुरूक्षेत्र पत्रिका, (अगस्त 2023) में सतत पोषण भारत की प्राथमिकताएं नामक लेख में वैश्विक पोषण लक्ष्य, पोषण कार्यक्रमों पर नीति आयोग की रिपोर्ट, राष्ट्रीय, परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–5, कुपोषण से निपटने के लिए मिलेट्स में अपार संभावनाएं, आगनबाड़ी सेवाओं के तहत पूरक पोषण, आहार, सम्बन्धी दिशा–निर्देश एवं चुनौतियों का अध्ययन किया गया है।

- भारत 2023 वार्षिक संदर्भ ग्रंथ, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित

  पुस्तक में उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण, अनाज की खरीद, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा, कल्याणकारी योजनाएं (प्रधानमंत्री पोषण योजना, अन्नपूर्णा योजना) अनाज भण्डारण, भण्डार विकास एवं विनियामक प्राधिकरण, केन्द्रीय भण्डार निगम, फसल कटाई के बाद अनाज का प्रबन्धन तथा अनाज का आयात और निर्यात आदि का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

- डॉ0 पीयूष गोयल, कुरूक्षेत्र पत्रिका, (अगस्त, 2023) में मातृ शिशु स्वास्थ्य और पोषण, नामक लेख में कुपोषण, महिलाओं की रक्षा हमारे जीवन की सुरक्षा, बच्चों में पोषण का महत्व, मातृ और शिशु स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य प्रोटीन और फल सब्जी में उपस्थित आवश्यक पोषक, तत्व, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत संचालित योजनायें, बच्चों में टीकाकरण तथा कुछ अन्य कार्यक्रम आदि का अध्ययन किया है।

- डॉ0 आकांक्षा जैन कुरूक्षेत्र पत्रिका, (अगस्त, 2023), भारत में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा लेख में खाद्य सुरक्षा के आयाम, जीवन चक्र के विभिन्न चरणों में खाद्य और पोषण सुरक्षा का महत्व, खाद्य और पोषण सुरक्षा के निर्धारक तत्व, चुनौतियां, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को बढ़ाने के उपाय तथा सहकारी पहल आदि का अध्ययन किया है।

- डॉ0 आकांक्षा जैन, कुरूक्षेत्र पत्रिका, (नवम्बर 2023) में स्वास्थ्य देखभाल एवं पोषण सम्बन्धित प्रतिभा का विकास, नामक लेख में भारत में सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ग्रामीण युवा प्रतिभा का परिपोषण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल और पोषण पर ध्यान केन्द्रित करने वाली कुछ सरकारी पहल, किशोरियों के बीच मिशन के तहत कुछ प्रमुख पहल (जन आरोग्य योजना, आयुष्मान योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान तथा डिलीवरी प्वाइंट) आदि का अध्ययन किया है।

- गजेन्द्र सिंह 'मधुसूदन' व शम्भूराम सिंह कुरूक्षेत्र पत्रिका (दिसम्बर 2023) में आत्म निर्भर गांवों में कृषि की भूमिका नामक लेख में सहकारी कृषि से ग्रामीण समृद्धि, कृषि स्टार्टअप वढ़ती ग्रामीण उद्यमिता, कृषि शिक्षा और विस्तार सेवाओं, कृषि विकास और खाद्य सुरक्षा, जलवायु अनुकूल कृषि तथा कृषि क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि का विश्लेषण किया है।

Sachin yadav

अध्ययन क्षेत्र–

मिर्जापुरी जनपद उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में अवस्थित प्राचीन जनपदों में से एक है। इस जनपद की प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक व सामाजिक महत्व होने के कारण लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करता है। यहाँ पर स्थित विंध्याचल धाम प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है, यहां पर मोती तालाब, लाल भैरव मंदिर, सीताकुण्ड, विल्डमफाल झरना, तारकेश्वर महादेव, चुनार किला, और देवरहा बाबा आश्रम आदि प्रमुख स्थल प्रसिद्ध है। यह अपने शिक्षा कला और संस्कृति के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। इसको प्राचीन काल से धार्मिक नगरी एवं पवित्र स्थान के नाम से जाना जाता है तथा इसे "विंध्यनगरी" और "पीतल नगरी" भी कहते हैं।

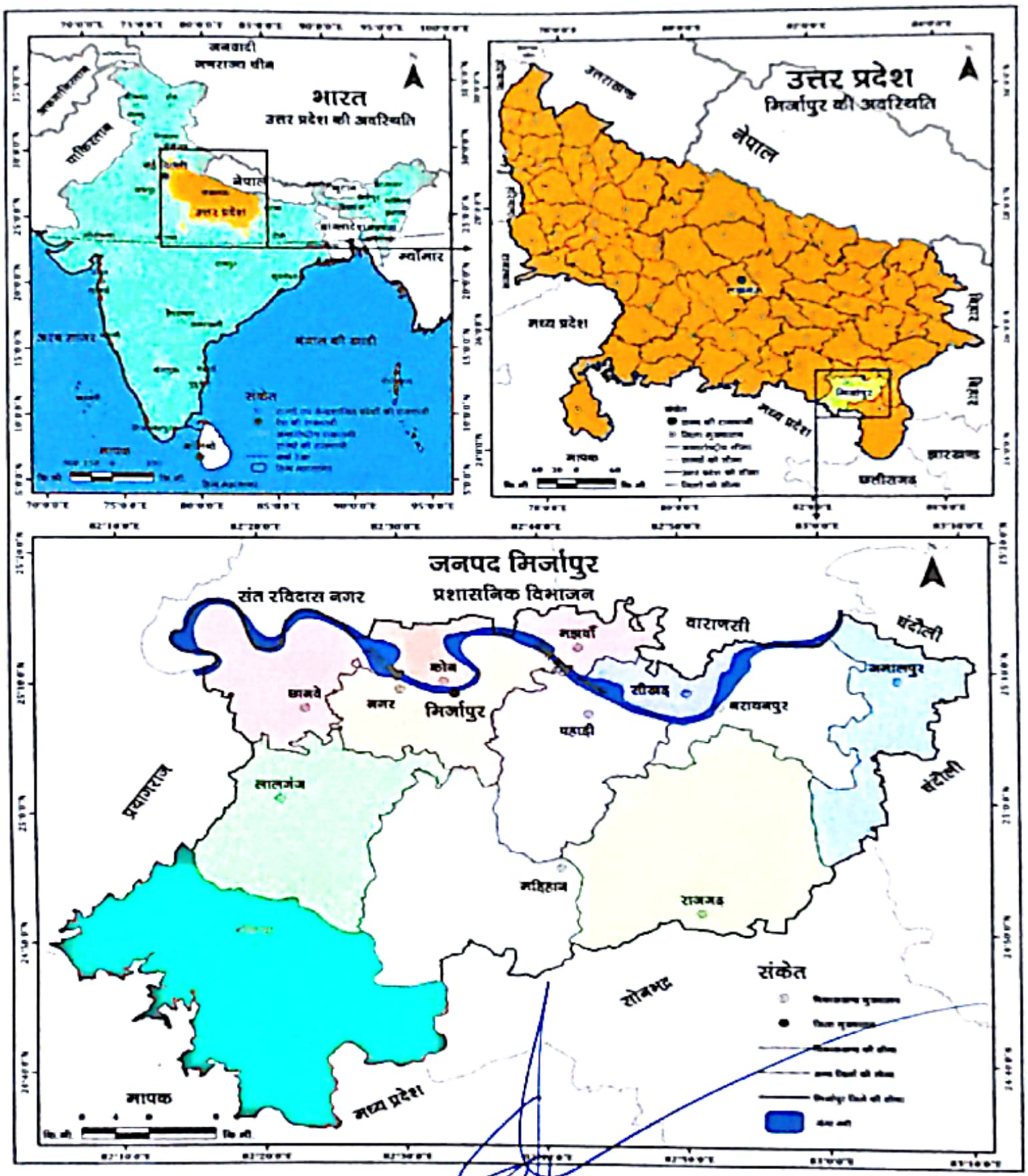

Sachin yadav

भारत के उत्तर–पर्वू में अवस्थित उत्तर प्रदेश राज्य का सामरिका दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस जनपद का अक्षांशीय विस्तार $24^0 40'$ उत्तर से $25^0 20'$ उत्तर तथा देशान्तरीय विस्तार $82^0 10'$ पूर्व से $83^0 10'$ पूर्व के मध्य फैला हुआ है, इस जनपद का आकार लगभग चतुर्भुजाकार स्थिति में है। इसकी उत्तर से दक्षिण की लम्बाई लगभग 75 किमी तथा पश्चिम से पूर्व की चौड़ाई लगभग 112 किमी है तथा "भारतीय मानक समय रेखा मिर्जापुर जनपद के घंटाघर चौराहे से $82^0 30'$ पूर्वी देशान्तर" का निर्धारण होता है। जनपद के उत्तर में भदोही और उत्तरपूर्व में वाराणसी, दक्षिण पूर्व में सोनभद्र और पश्चिम में प्रयागराज तथा दक्षिण का कुछ हिस्सा मध्य प्रदेश राज्य से साझा करता है। अध्ययन क्षेत्र का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4521 वर्ग किलोमीटर है जो उत्तर प्रदेश का 1.85 प्रतिशत है इस अध्ययन क्षेत्र में 4 तहसील, 12 विकासखण्ड, 18 पुलिस स्टेशन, 105 न्याय पंचायत, 809 ग्राम पंचायत, 1745 आबाद ग्रामों की संख्या तथा 220 गैर आबाद ग्रामों की संख्या है। इस अध्ययन क्षेत्र की कुल जनंसख्या 2496970 व्यक्ति है। यहां की कुल साक्षरता दर 68.46 प्रतिशत है जिसमें से 78.92 प्रतिशत पुरुष तथा 56.86 प्रतिशत स्त्रियों की साक्षरता है। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र की 86.08 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में तथा 13.92 प्रतिशत जनसंख्या शहर में निवास करती है। अध्ययन क्षेत्र का लिंगानुपात 903 प्रति हजार है तथा यहां का जन घनत्व 552 वर्ग किलोमीटर है जिसकी दशकीय वृद्धि दर 20.35 है और जोत का आकार सामान्तः 89.64 प्रतिशत सीमान्त और लघु है। अध्ययन क्षेत्र का कुल खाद्य उत्पादन 673003 मीट्रिक टन है तथा यहां पर निवास कर रही जनसंख्या को प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता 269.52 किग्राप्रति व्यक्ति प्रति वर्ष है।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में खाद्यान उत्पादन एवं पोषण सुरक्षा उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन समाधान तथा नियोजन करना है। विगत वर्षों में खाद्यान्न विकास और पोषण सुरक्षा का आकलन करना तथा इसके साथ–साथ अध्ययन क्षेत्र के प्राकृतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर अध्ययन किया जायेगा।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र का उद्देश्य निम्नवत है –

- जनपद में प्रतिव्यक्ति खाद्य उपलब्धता तथा पोषण के वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
- विकासखण्डवार ग्रामीण लोगों के सामने आने वाली अनेक खाद्य सम्बन्धित चुनौतियों का अध्ययन करना एवं समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।
- विकासखण्डवार मुख्य फसलों के उत्पादन, उत्पादकता एवं वहां की जनसंख्या के लिए पोषण सुरक्षा में भूमिका का अध्ययन करना।

Sachin yadav

विधि तन्त्र–

अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न उत्पादन एवं पोषण सुरक्षा के कारकों पर विचार किया जायेगा। जो कृषि क्षेत्र में भूमि संसाधन तथा मानव विकास हेतु नई तकनीकी के प्रचार, प्रसार एवं स्वीकार्यता को निश्चित करते हैं। परम्परागत भूमि उपयोग में किस सीमा तक आधुनिक परिवर्तन को ग्रहण किया गया है जिसमें यथा आवश्यक निम्न विधितंत्र प्रस्तुत किया जायेगा।

1. प्राथमिक और द्वितीय आंकड़ों को सांख्यिकीय के माध्य, माध्यिकाएवं बहुलक विधियों का प्रयोग करते हुए सारणीयन किया जायेगा।
2. मानचित्र के लिए जी0आई0एस0 साफ्टवेयर का प्रयोग किया जायेगा।
3. प्रस्तुत अध्ययन हेतु कुछ आधारभूत सिद्धान्तों एवं प्रारम्भिक सूचनाओं, व्यक्तिगत आनुभाविक सर्वेक्षणों, सरकारी अभिलेखों तथा अन्य प्रकाशनों से प्राप्त सामग्री एवं आंकड़ों का सांख्यिकीय विधि द्वारा विश्लेषण किया जायेगा।
4. आंकड़ों को प्रदर्शित करने के लिए आरेख व ग्राफ का अनुप्रयोग किया जायेगा।
5. प्राथमिक तथा द्वितीयक आंकड़ों का मूल्यांकन तथा विश्लेषण किया जायेगा।
6. प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में आंकड़ों को एकत्रीकरण करने के लिए, स्तरीकृत नमूनाकरण विधि का प्रयोग किया जायेगा।
7. आवयकतानुसार कम्प्यूटर का प्रयोग कर गणनाएं एवं मानचित्रण किया जायेगा।

अध्ययन क्षेत्र का महत्व एवं प्रासंगिकता–

प्रस्तुत अध्ययन का शैक्षणिक दृष्टिकोण से अतयंत महत्व तो है ही साथ ही साथ व्यवहारिक व वैज्ञानिक महत्व भी है। आज पोषण सुरक्षा की समस्या को देखते हुए कह सकते हैं कि आने वाली पीढ़ी के लिए भयानक समस्या प्रकट होगी और जिस प्रकार पोषण का स्तर गिरता जा रहा है उससे मनाव के जीवन प्रत्याशा में कमी, रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी, नये–नये रोगों का जन्म तथा मानव व्यवहार में परिवर्तन जैसी अनेक समस्याओं का जन्म हो रहा है। इसके अलावा उपलब्ध संसाधनों का अनौचित्यपूर्ण वितरण, अविवेकपूर्ण खाद्य उपभोग, दैनिक दिनचर्या और सांगठनिक कार्य कुशलता में कमी भी इसी प्रकार की समस्या को उत्पन्न करती है।

- प्रस्तुत अध्ययन का जनपद में खाद्य उत्पादन से सम्बन्धित समस्या के निवारण में सहयोग प्रदान करेगा।
- जनपद में लोग स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याओं के प्रति जागरुक होंगे।
- जनपद में पोषण सुरक्षा के प्रति लोगों में सकारात्मक भावना का विकास।
- पोषण सुरक्षा सम्बन्धित भारत सरकार की योजनाओं में सहयोग।
- भारत सरकार द्वारा संचालित विभिन्न पोषण सुरक्षा एवं उत्पादन सम्बन्धित योजनाओं / नीतियों में सहयोग करना।
- जनपद में संतुलित पोषण का आधार खाद्य पादप से प्राप्त करना।

Sachin yadav

संदर्भ ग्रंथ–सूची–

- गुप्ता, रामकेवल (1997) शोध–ग्रंथ ग्रामीण भारत में कृषि, भोजन एवं पोषण की स्थिति, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
- पाण्डेय, जे0एन0, एस0आर0 कमलेश (2006) कृषि भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर, पृ0सं0 59–79।
- मिश्रा, निशा (2010) शोध ग्रंथ भारत में खाद्यान्न उत्पादन की प्रवृत्ति, महात्मा गांधी काशीविद्यापीठ, वाराणसी, फैजाबाद।
- बाबू, बृजेश (2011) शोधग्रंथ, जनपद एटा में कृषि उत्पादन में पोषण तत्व एवं उसका मानव स्वास्थ्य पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन, डॉ0 भीम राव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।
- गौतम, अलका (2012) आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद पृ0सं0 (338–355)।
- हुसैन, माजिद (2018) कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0सं0 256–272।
- सिंह, जगदीश, एवं सिंह काशीनाथ (2020) आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर पृ0सं0 (217–238)।
- तिवारी, आर0सी0 (2020) अधिवास भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन्स प्रयागराज पृ0सं0 (68–92)
- वही, पृ0सं0 225–246।
- जाट, बी0सी0, गुर्जर राजकुमार (2020) भारत का भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ0सं0 28–32।
- तिवारी, आर0सी0 व सिंह बी0एन0 (2021) कृषि भूगोल, वालिका पब्लिकेशन्स, प्रयागराज, पृ0सं0 (324–371)।
- तिवारी, आर0सी0 (2022), भारत का भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, प्रयागराज, पृ0सं0 59–65।
- वही, पृ0सं0 226–251।
- सक्सेना, जगदीप (मार्च, 2023) कृषि का समावेशी विकास और आधुनिकीकरण, योजना पत्रिका, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (भारत सरकार), पृ0सं0 29–38।
- बाधवा, मंजुला (अगस्त 2023) पोषण सुरक्षा विजन, 2030, कुरूक्षेत्र पत्रिका, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ काम्पलेक्स, नई दिल्ली, पृ0सं0 5–8।
- कपूर, निमिष (अगस्त 2023) सतत पोषण हेतु भारत की प्राथमिकताएँ कुरूक्षेत्र पत्रिका, प्रकाश विभाग, सूचना भवन, सीजीओ काम्पलेक्स, नई दिल्ली, पृ0सं0–22–27।

Sachin yadav

- सिंह, गजेन्द्र, 'मधुसूदन', सिंह, शम्भूनाथ (दिसम्बर–2023) आत्मनिर्भर गाँव में कृषि की भूमिका, कुरूक्षेत्र पत्रिका, प्रकाश विभाग, सूचना भवन, सीजीओ काम्पलेक्स, नई दिल्ली पृ0सं0 40–46।
- भारत (2023) वार्षिक संदर्भ ग्रंथ, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार प्रकाशन, पृ0सं0 485–504।
- सक्सेना, जगदीप (अगस्त 2023) भारत में कृषि वैश्विक शक्ति बनने की ओर, योजना पत्रिका, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (भारत सरकार) पृ0सं0 49–52।
- जैन, आकांक्षा (अगस्त 2023) भारत में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, कुरूक्षेत्र पत्रिका, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली, पृ0सं0 9–15।
- गोयल, पीयूष (अगस्त 2023) मातृ–शिशु स्वास्थ्य और पोषण, कुरूक्षेत्र पत्रिका, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ काम्पलेक्स, नई दिल्ली, पृ0सं0 16–21।
- जैन, आकांक्षा (नवम्बर 2023) स्वास्थ्य देखभाल एवं पोषण सम्बन्धी प्रतिभा का विकास, कुरूक्षेत्र पत्रिका, प्रकाश विभाग, सूचनाभवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली, पृ0सं0 31–37।
- सक्सेना, जगदीप (दिसम्बर 2023) कृषि और ग्रामीण विकास प्रमुख पहल और उपलब्धियाँ, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (भारत सरकार) पृ0सं0 49–53।
- Swaminathan, M.S. (1987), Essentials of food and Nutrition, Karnatka : Banglore Printing.
- Swaminathan, M.S. (1987) Building a national food security system. New
- Mohammad, A. (1989), Food production and food problem in India. New Delhi : Concept.
- Sharma, Suneeta (2019) Population Dynamics, food grains production and nutrition security in Kathua District-A Geographical analysis, University of Jammu.
- Delhi: Indian Environment Society.
- जिला सांख्यिकीय पत्रिका
- Distrcit Census Handbook, Mirzapur
- www.vbspu.ac.in
- www.google.com

Sachin yadav
सचिन कुमार यादव
(शोध छात्र)

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	SACHIN KUMAR YADAV
Title	JANPAD MIRZAPUR ME KHADYA UDPADAN EVAM POSHAN SURAKSHA KA EK BHAUGOLIK ADHYAYAN
Paper/Submission ID	3625334
Submitted by	drsanjay.geography@gmail.com
Submission Date	2025-05-17 13:43:27
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Sachin yadav

DrillBit

DrillBit Similarity Report

1	3	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Paper Submitted to Awadesh Pratap Singh University, Rewa	<1	Student Paper
2	Paper Submitted to Banaras Hindu University	<1	Student Paper
3	Paper Submitted to Awadesh Pratap Singh University, Rewa	<1	Student Paper

Sachin Yadav